उपसंहार

गांधीजी ने खादी के संदर्भ में कहा था- खादी की अवधारणा और भी बड़े उद्देश्य के साथ विकसित की गई और वह है अपने गांवों को भूख से मुक्त करना'। खादी रोजगार जुटाकर तथा स्वदेशी का गौरव जागृत करके भारत के गांवों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। महात्मा गांधी ने चरखा चलाकर और सूत कातकर स्वाधीनता की जंग के साथ ही स्वावलंबन की जंग भी जीती। आज भी खादी के रुप में महात्मा गांधी हमारे बीच मौजूद हैं । बदलते परिवेश में भी खादी की धाक बढ़ती जा रही है। खादी एक संदेश है, खादी एक दर्शन है। इसी खादी के जरिए रोजगार के साधन बढ़ रहे हैं । जहां परंपरागत कौशल एवं उद्योग का अथाह भंडार है। रोजगार किसी भी देश के आर्थिक विकास का अनिवार्य कारक है। इसी वजह से केंद्र सरकार भी रोजगार के नए अवसर पैदा करने पर सबसे अधिक बल दे रही है। कृषि के बाद गैर कृषि क्षेत्र के अंतर्गत मध्यम एवं लघु तथा कुटीर उद्योग की इकाइयां ही गांवों में बड़े पैमाने पर रोजगार उपलब्ध करा रही है। कुटीर उद्योगों में सबसे बड़ा भाग खादी इकाइयों का है।

खादी हमारे सामाजिक परिवेश में घरेलू स्तर की तमाम जरुरतों को पूरा करने की दिशा में एक संभावित उद्योग है। जैसे-सूत से निर्मित कपड़ा, फलों से बने पेय उत्पाद, माचिस, चमड़ाउत्पाद, मिट्टी के बर्तन, हथकरघा, हस्तशिल्प इत्यादि ।

सरकार खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग, कॉयर बोर्ड और प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना आदि के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों और कस्बों में ग्रामीण उद्योगों को प्रोत्साहन देने के लिए विभिन्न नीतियों और कार्यक्रमों को लागू कर रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपने भाषण में खादी का उपयोग करने का निवेदन किया। प्रधानमंत्री की अपील का प्रभाव लोगों पर अधिक पड़ा ।

एक साल से भी कम समय में खादी की बिक्री में वृध्दि हुयी। जिससे ग्रामीण क्षेत्र में बेरोजगार युवाओं और महिलाओं को रोजगार के अधिक से अधिक अवसर उपलब्ध करा सकें होना संभव हुआ।

खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग की ओर से महिलाओं को रोजगार की दिशा में किए जा रहे प्रयासों के तहत चरखे का निरंतर विकास किया जा रहा है। कभी बांस की खपाची से तैयार होने वाला चरखा अब हायटेक हो गया है। केंद्र सरकार की तैयारी है कि देश में बड़े पैमाने पर सोलर उर्जा चलित चरखे चलाये जाएं। यह चरखे खासतौर से महिलाओं के लिए हैं। देश में महिलाओं की कुल आबादी के दस प्रतिशत को इस कमी के साथ जोड़ रही है। सरकार की महिला सशक्तीकरण के अभियान को गति देने की भी योजना है। सोलर चरखों से न तो पर्यावरण प्रदूषण होगा और नहीं महिलाओं को अधिक श्रम लगाना पड़ेगा। इसके साथ ही उनकी आय में बढ़ोतरी होगी। एमएसएमई मंत्रालय ने खादी की बिक्री को 26 हजार करोड़ रुपये से बढ़ाकर एक लाख करोड़ रुपये तक किया है। इस क्षेत्र में महिलाओं को काफी संख्या में रोजगार के अवसर प्रदान किये हैं । सोलर चरखा इसके लिए सबसे बेहतर उपाय है। यह बुनकरों पर तनाव कम कर उत्पाकता बढ़ाने में मददगार साबित होगा। साथ ही कारीगरों की आय में भी बृध्दि होगी।

सरकार ने खादी और हथकरघा उ़द्योग के लिए कई योजनाओं की घोषणा की है। इनमें प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम प्रमुख है। इसके तहत ग्रामीण उद्योग लगाने के लिए ऋण में सब्सिडी का प्रावधान है। इसी प्रकार बाजार तैयार करने में सहायता के लिए एमडीए योजना है। हथकरघा कलस्टर के लिए सहायता राशि भी 60 लाख रुपये से बढ़ाकर 2 करोड़ रुपये कर दी गई है। सूक्ष्म और लघु ग्रामीण उद्योगों को सहायता देने में मुद्रा बैंक भी उपयोगी सिध्द हो सकता है।

सरकार खादी को व्यावहारिक और प्रासंगिक बनाने के लिए देश के नामी फैशन डिजाइनरों के साथ भी बातचीत कर रही है ताकि खादी को युवा वर्ग के बीच प्रासंगिक बनाया जा सके। युवा वर्ग खादी को एक बहुत बड़ा बाजार उपलब्ध करा सकता है। यदि खादी की सही ब्रांडींग की जाए और इसमें खादी डेनिम जैसे नए प्रयोग किए जाएं और गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए खादी ट्रेडमार्क का उपायोग किया जाए तो इसके लिए बेहतर बाजार तैयार होगा। प्रधानमंत्री जी ने हाल ही में 20 सितंबर 2015 को प्रसारित मन की बात कार्यक्रम में खादी को फैशन से जोड़ने पर जोर दिया है ताकि युवाओं को इससे जोड़ा जा सके, जिससे देश में न केवल रोजगार के अवसर बढ़ेंगे बल्कि स्वदेश प्रेम भी जागृत होगा।

भारत के खादी उद्योग के मुताबिक पूरे देश में इस उद्योग में 10 लाख से ज्यादा लोग लगे हुए हैं। इसकी व्यापक लोकप्रियता से खादी में बदलाव हो रहा है और इससे जुड़े लाखों कारीगरों की जिदंगी में भी बदलाव दिखने लगा है। इस उद्योग को आधुनिक बनाने की दिशा में सरकारी स्तर पर प्रयास किया जा रहा है। हालांकि अभी भारतीय कपड़ा बाजार में खादी की हिस्सेदारी करीब दो फीसदी के आसपास है, लेकिन इसमें तेजी से बढ़ोतरी हो रही है। खादी ग्रामोद्योग आयोग (केवीआइसी) ने 2200 सक्रिय संस्थाओं में से 300 को इस काम के लिए चुना है। सुधार के एजेंडे के तहत इन संस्थाओं को लागत के साथ-साथ मुनाफे का चार्ट बनाने को कहा है। आधुनिक तकनीक के चरखे बनवाए हैं। खादी की गुणवत्ता पर फोकस करने के लिए खरीददार-विक्रेता के लिए व्यापार मेले जैसा आयोजन भी योजना में है।

जिस खादी को महात्मा गांधी ने स्वदेशी का प्रतीक मानते हुए स्वराज का आधार स्तंभ बनाया। उस खादी ने बीते 100 बरसों में कई रंग देखे और दिनोंदिन उसकी प्रासंगिकता बढ़ती गई। आज खादी अंतरराष्ट्रीय मंच पर डिजाइनर स्वरुप में अपनी छटा बिखेर रहा है। एक जमाना

था जब खादी वस्त्रों को गांव का पहनावा माना गया, लेकिन इसका प्रभाव धीरे-धीरे बढ़ता ही गया। देश में ही नहीं विदेशों में यह अधिक प्रासंगिक है।

अब स्थिति यह है कि महानगरों में खादी पर फैशन शो का आयोजन हो रहा है। हाल के दिनों में देश के शीर्ष फैशन डिजाइनर खादी वस्त्रों को आकर्षक बनाने की कोशिश कर रहे हैं। फैशन डिजाइन काउंसिल ऑफ इंडिया ने खादी का एक फैशन शो आयोजित किया। तमाम फैशन डिजाइनरों के पास खादी वस्त्रों का एक बड़ा कलेक्शन है। बाजार की मांग को देखते हुए इसके अलग-अलग डिजाइन और सूत तैयार कराए जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में हम देखें तो भारत के संतुलित आर्थिक विकास में खादी ग्रामोद्योग का बहुत बड़ा योगदान है। यह ऐसा क्षेत्र है जिसमें हर हाथ को काम दिया जा सकता है।

अगर इस पर सरकार ध्यान दे तो यह न केवल भारत के संतुलित विकास में सहभागी बनेगी, बल्कि भारत की बेरोजगारी भी दूर करेगी। सरकार अगर ग्रामोद्योग पर ध्यान देगी तो न केवल गांवों से शहरों की तरफ पलायन रुकेगा। इससे शहर अनावश्यक बोझ से बच जाएंगे।

वर्तमान संदर्भ में खादी की प्रासंगिकता एवं महिलाएँ इस विषय पर लघु शोध-प्रबंध पूरा किया गया है। इस अध्ययन में विषय की पार्श्वभूमि कथन करते समय खादी का उद्भव से लेकर विकास तक जितनी हो सकती हैं उतनी जानकारी सूत्ररूप से रखने का प्रयास किया गया है ।

खादी महिलाओं के रोजगार में सहायक है और वर्तमान संदर्भ में खादी की प्रासंगिकता महिला और युवाओं में अधिक बढ़ी है । खादी की परिधि भारत में ही नहीं पूरे विश्व में फैली हैं । इसका स्पष्टीकरण करने की कोशिश की है।

.....

मगन संग्रहालय और विभाजी